मोची का गीत

सारी रात धनवान व्यक्ति अपने धन की चिंता करता रहता है और घर के निम्नतल में रहने वाले मोची के गाने की आवाज़ उसे सारा दिन जगाये रखती है.

गुस्से में वह एक ऐसी चाल चलता है कि मोची गीत गाना छोड़ देता है. लेकिन एक दिन उसकी पत्नी की बात उसे साहसिक बना देती.

मर्शिया सेवल ने पेरिस के एक घर में रहने वाले दो लोगों की इस कहानी को सुंदर ढंग से कहा है.

मोची का गीत

एक समय की बात है कि पेरिस के एक घर के निम्नतल में एक गरीब मोची रहता था. अपनी पत्नी और अपने बच्चों की देख-रेख करने के लिए उसे बहुत सवेरे से लेकर देर रात तक काम करना पड़ता था. लेकिन अपने छोटे, अँधेरे कमरों में रहते हुए भी वह बहुत प्रसन्न था और जूते बनाते समय सारा दिन गीत गाता रहता था.

उसी घर के ऊपरी तल पर एक धनवान व्यक्ति रहता था. उसके घर के कमरे विशाल और उजले थे. वह उत्तम वस्त्र पहनता था. खाने के लिए उसके पास बढ़िया चीज़ें थीं. लेकिन तब भी वह प्रसन्न नहीं था.
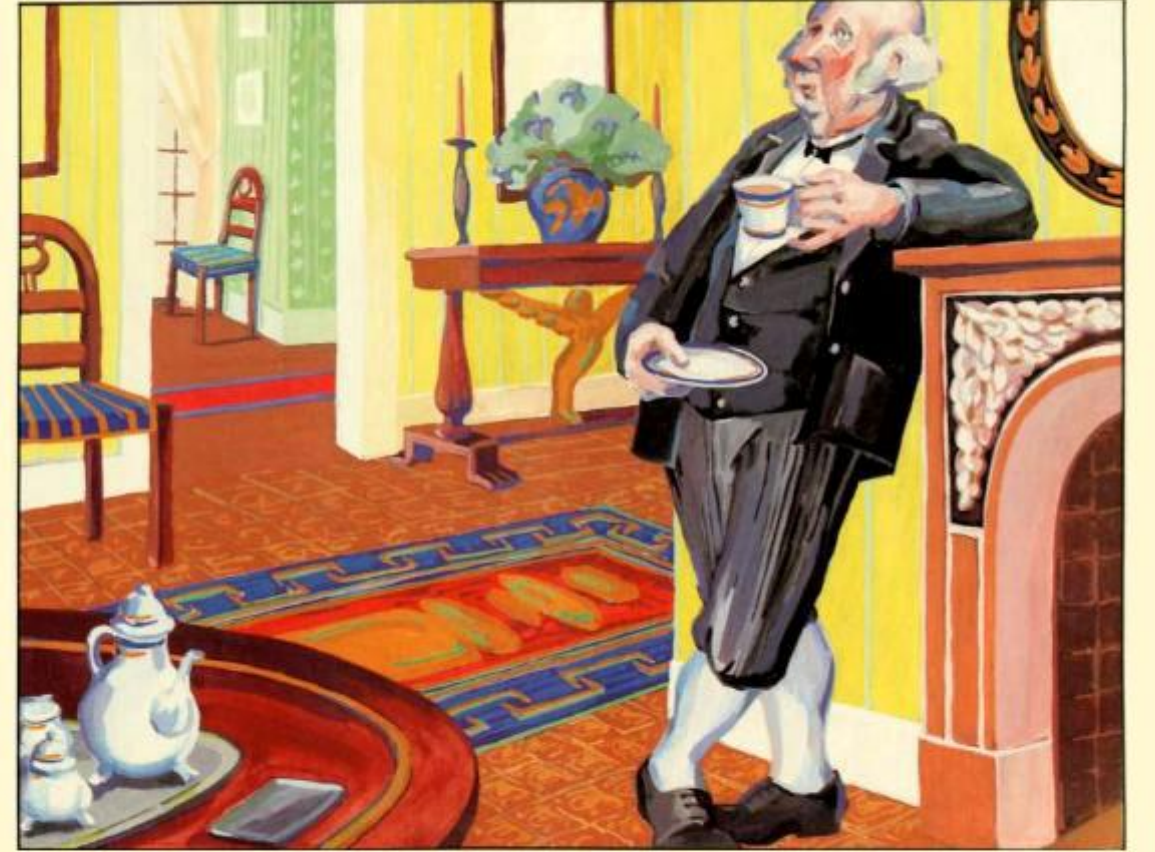
सारी रात बिस्तर पर लेटा वह जागता रहता था और अपने धन के विषय में सोचता रहता था- कि कैसे वह और धन कमा सकता था, कि कहीं उसका धन चोरी न हो जाए. अकसर जब उसे नींद आती तब तक सूर्य का प्रकाश उसके कमरे की खिड़कियों पर चमकने लगता था.

अब जैसे ही दिन का उजाला होता था तो मोची उठ जाता था और अपने काम में लग जाता था. काम करते-करते वह कोई गीत गाने लगता था. उसके गाने की आवाज़ ऊपर सोये धनी आदमी को नींद से जगा देती थी.

"यह तो बहुत ही विकट बात है!" धनी आदमी बोला. "मैं रात में नहीं सो सकता क्योंकि मैं धन के विषय में सोचता रहता हूँ और मैं दिन में भी नहीं सो सकता क्योंकि यह मूर्ख मोची गीत गाते रहता है."
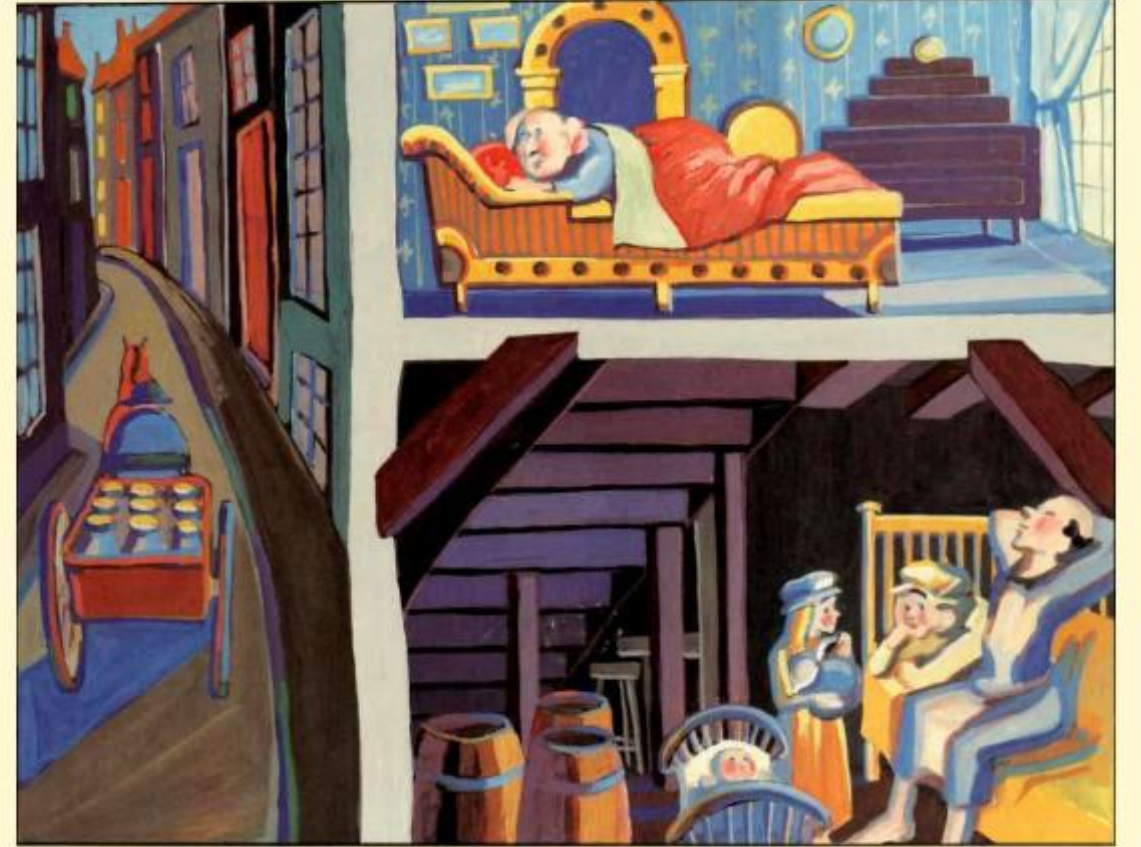
धनी आदमी बैठ कर सोचने लगा.

"हम्म," उसने अपने आप से कहा, "अगर इस मोची के पास भी चिंता करने का कोई कारण होता तो वह इतने गीत न गा पाता. उसे रोकने का कोई तरीका मुझे सोचना पड़ेगा. अब वह क्या बात है जो लोगों को सब से अधिक चिंतित करती है?

"अरे, धन ही तो सबसे अधिक चिंतित करता है, सच में! कुछ लोग चिंता करते हैं क्योंकि उनके पास कम धन होता है. मोची के पास पर्याप्त धन नहीं है, यह सत्य है, लेकिन उसे इस बात की चिंता नहीं है. वास्तव में तो वह सबसे प्रसन्न व्यक्ति है.

"कुछ लोग चिंता करते हैं क्योंकि उनके पास अधिक धन है. मेरी भी यही समस्या है. अगर मोची के पास अधिक धन होता तो क्या वह भी चिंता करने लगता? इस बात से मेरे मन में एक विचार आ रहा है! अब मुझे पता चल गया है कि मुझे क्या करना होगा!"
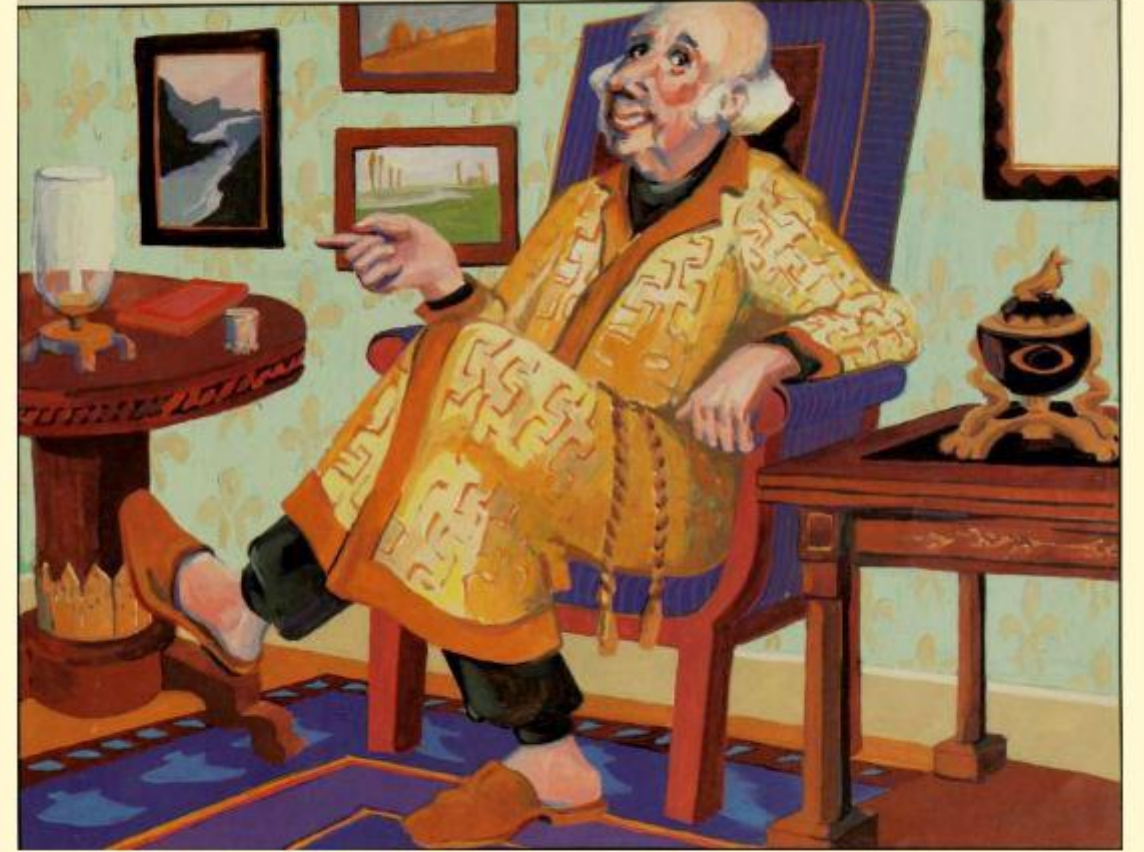
कुछ मिनटों बाद धनी आदमी गरीब मोची के घर आया.

"मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?" मोची ने अपने पढ़ोसी को देख कर कहा. लेकिन इतने धनवान व्यक्ति को अपनी छोटी सी दूकान में देख कर उसे आश्चर्य हो रहा था.

"मैं तुम्हारे लिए एक उपहार लाया हूँ," धनवान व्यक्ति ने कहा और मोची को एक थैली दी.

मोची ने थैली खोली और देखा कि वह सोने के चमकते हुए सिक्कों से भरी हुई थी.

"मैं यह सब पैसे नहीं ले सकता!" वह चिल्लाया. "मैंने इन्हें नहीं कमाया. इसे वापस ले लें."

"नहीं," धनवान बोला. "तुम ने अपने गीत सुना कर यह धन कमाया है. यह मैं तुम्हें इसलिये दे रहा हूँ क्योंकि जितने भी लोगों को मैं जानता हूँ उनमें से तुम सब से सुखी आदमी हो."
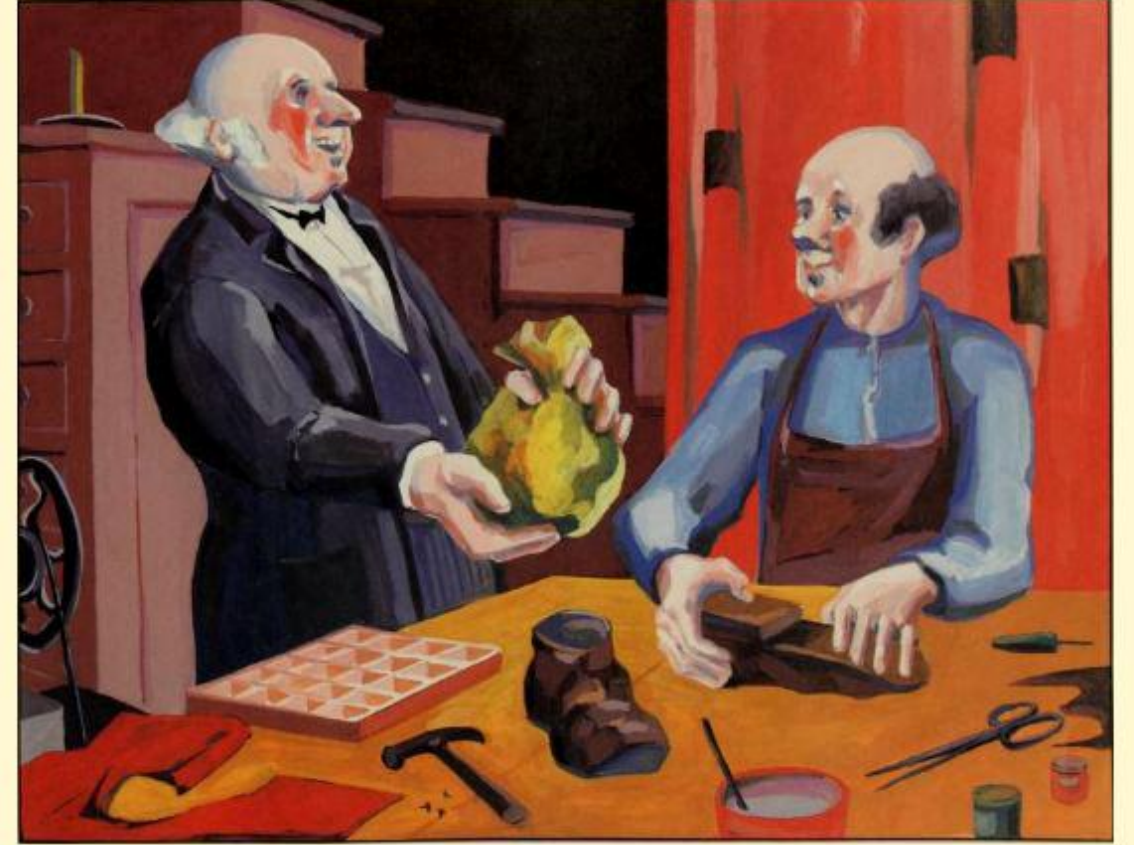
उसके धन्यवाद की प्रतीक्षा किये बिना धनवान आदमी उसकी दूकान से चला गया.

मोची ने सोने के सिक्के थैली से निकाल कर मेज़ पर रख दिए और उन्होंने गिनने लगा. उसने बावन सिक्के गिने थे कि खिड़की के बाहर उसने किसी को जाते देखा. उसने झटपट सारे सिक्के छिपा दिये. फिर वह अपने बेडरूम के अंदर चला गया ताकि सिक्के गिनते हुए कोई उसको देख न पाए.

उसने अपने बिस्तर पर सिक्कों का ढेर लगा दिया. वह कितने सुनहरे थे! कितने चमकीले थे! इतने पैसे उसने आजतक एक साथ न देखे थे. वह उन सिक्कों को देखता रहा, और वह तब तक देखता रहा जब तक कि कमरे की हर चीज़ उसे सुनहरी और चमकीली न दिखने लगी. फिर वह धीरे-धीरे सिक्कों को गिनने लगा.

"सोने के सौ सिक्के! मैं कितना धनवान हूँ! मैं इन्हें कहाँ छिपा कर रखूं?"

पहले तो उसने सिक्कों को अपने बिस्तर के पैताने एक चद्दर के नीचे छिपा कर रख दिया क्योंकि अपने काम करने की जगह से वह बिस्तर के पैताने को देख सकता था.

"चद्दर के नीचे तो एक बड़ा ढेर बन गया है," उसने अपने आप से कहा. "शायद कोई देख ले और सिक्के चुरा ले. मुझे सिक्कों को सिरहाने के नीचे छिपाना चाहिये."
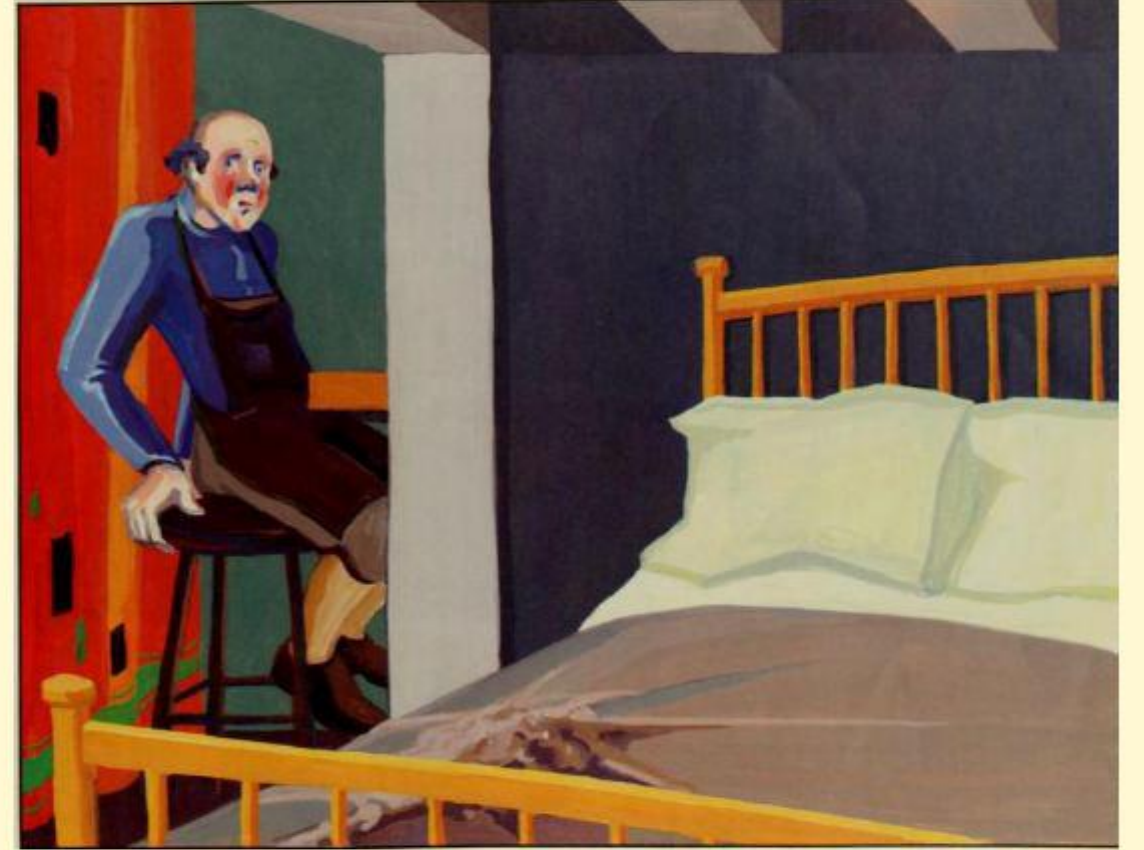
जब वह सिक्कों को सिरहाने के नीचे छिपा रहा था तो उसकी पत्नी कमरे में आ गई.

“बिस्तर के साथ क्या हुआ?” उसने पूछा.

मोची ने पत्नी को घूर कर देखा और गुस्से से बाहर जाने को कहा- जीवन में पहली बार उसने पत्नी को कठोर शब्द कहे थे.

डिनर का समय हो गया. लेकिन वह कुछ भी न खा पाया क्योंकि उसे डर लग रहा था कि खाना खाते समय कोई उसका धन न चुरा ले. काम करते समय भी उसने कोई गीत नहीं गाया. शाम होते-होते उसकी मन-स्थिति और भी बिगड़ गई. उसने पत्नी से प्यार भरा एक शब्द भी न कहा.

दिन प्रतिदिन मोची की अपने धन के लिये चिंता बढ़ती गई और वह और दुःखी होता गया. रात में वह सोने का साहस न कर पाता था कि कहीं जागने पर उसे अपना धन गायब न मिले. रात भर वह बिस्तर पर करवटें लेता रहता था.

लेकिन ऊपरी तल पर धनवान आदमी बहुत प्रसन्न था. "यह तो बड़ी कारगर योजना थी," उसने ऊंघते हुए अपने से कहा. "अब मोची के गीत मुझे जगाएँगे नहीं और मैं सारा दिन मज़े से सो पाऊँगा."

महीना-भर मोची अपने सौ सोने के सिक्कों को लेकर चिंतित रहा. वह कमज़ोर और निस्तेज हो गया था और उसकी पत्नी और बच्चे भी दुःखी थे. आखिरकार इस चिंता को सहना उसके लिये असंभव हो गया और उसने अपनी पत्नी को सब कुछ सच-सच बता दिया.

"प्रिय पति," पत्नी बोली. "सोने के सिक्के वापस लौटा दो. दुनिया का सारा सोना भी उतना मूल्यवान नहीं है जितनी मूल्यवान तुम्हारी ख़ुशी और तुम्हारे गीत हैं."

पत्नी की बात सुन कर, मोची को कितनी राहत मिली! उसने सिक्कों से भरी थैली उठायी और भागता हुआ ऊपर धनवान व्यक्ति के घर गया. थैली उसके सामने मेज़ पर फैंक कर वह मुस्करा दिया और बोला, “यह रही सोने के सिक्कों से भरी आपकी की थैली! इसे वापस ले लें! मैं धन के बिना रह सकता हूँ पर मैं अपने गीतों के बिना नहीं रह सकता.”

समाप्त